सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन : सैद्धान्तिक एवम् व्यावहारिक पक्ष

डॉ0 मधु गुप्ता*

सारांश

वर्तमान में मूल्यांकन से सम्बन्धित सर्वमान्य तथ्य यह है कि प्रत्येक बच्चे की प्रकृति एवम् सीखने की गति में भिन्नता होती है तथा वे अलग–अलग तरीकों से सीखते हैं। उनकी प्रस्तुति एवम् अभिव्यक्ति भी पृथक एवम् विशिष्ट होती है। अतः एक समान मूल्यांकन पद्धति उपयुक्त नहीं हो सकती है। परन्तु वास्तविकता यह है कि वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली शिक्षा के लक्ष्यों के सम्बन्ध में समग्र प्रतिपुष्टि प्रस्तुत नहीं करती है वरन् केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक या अकादमिक प्रगति (Scholastic Aspect) के बारे में ही जानकारी देती है। जबकि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सह–शैक्षिक पहलुओं (Co-scholastic Aspect) का भी समान महत्व होता है। इसलिए मूल्यांकन प्रणाली में नवाचार की आवश्यकता की प्रतिपूर्ति में सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन प्रणाली (Continuous and Comprehensive Evaluation) के नवीन प्रत्यय ने की।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज की दशा व दिशा को निर्धारित करने के साथ–साथ अपने परिश्कृत रूप में मानव को विवकेशील व प्रतिभावान बनाती है। इसका सर्वप्रमुख लक्ष्य विद्यार्थियों में प्रजातान्त्रिक मूल्यों व व्यवहारों के प्रति कटिबद्धता, सामाजिक, आर्थिक, लैंगिक व अन्य आवश्यकताओं के प्रति संवदेनशीलता तथा सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं में भाग लेने की क्षमता उत्पन्न करना है। इस प्रकार यह मानव जीवन के समस्त पहलुओं के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है।

ज्यों–ज्यों मानव का विकास होता गया, मानव ने शिक्षा व इससे जुड़े अन्य सम्प्रत्ययों के विकास पर भी ध्यान केन्द्रित किया। परन्तु दुर्भाग्यवश बदलते समय की जरूरतों के अनुसार शिक्षा प्रणाली में अपेक्षित परिवर्तन नहीं आ पाया। परिणाम यह हुआ कि शिक्षा कुछ अनुश्ठानों वाली रूढ़िबद्ध कवायद होती चली गयी। वर्तमान में विद्यालयों में सृजन की जगह अनुकरण, ग्रहण की जगह बाह्य अभिव्यक्ति और आत्मबोध की जगह बाह्य जगत के अंकन को ही प्रमुखता मिलती गयी। और देखते ही देखते, शिक्षा की प्रगति को मापने का आधार गुणात्मक विकास के स्थान पर अंकीय मापन हो गया। भला शत–प्रतिशत अंको का तात्पर्य शत–प्रतिशत योग्यता कैसे हो सकती है? मूल्यांकन जैसा विशाल सम्प्रत्यय जो शिक्षा प्रणाली के गुण व दोशों को उजागर करने में पूर्णरूपेण सक्षम है, की जगह सिर्फ अंकीय मापन ने कैसे ले ली? आधुनिक शिक्षा व इसकी मूल्यांकन प्रक्रिया से सम्बन्धित उपरोक्त यक्ष प्रश्न उठने लाजमी हैं। और क्यों न हों? क्योंकि शिक्षा का अभिन्न अंग मूल्यांकन है तथा यह शिक्षा के समस्त लक्ष्यों को प्राप्त करने सम्बन्धी जानकारी को ज्ञात करने का एक मात्र साधन है।

वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली शिक्षा के लक्ष्यों के सम्बन्ध में समग्र प्रतिपुश्टि प्रस्तुत नहीं करती है वरन् केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक या अकादमिक प्रगति (Scholastic Aspect) के बारे में ही जानकारी देती है। जबकि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सह–शैक्षिक पहलुओं (Co- scholastic Aspect) का भी समान महत्व होता है। इसलिए मूल्यांकन प्रणाली में नवाचार की आवश्यकता की प्रतिपूर्ति में सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन प्रणाली (Continuous and Comprehensive Evaluation) के नवीन प्रत्यय ने की।

सैद्धान्तिक पक्ष

सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन का आशय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के सम्बन्ध में आलोचनात्मक प्रतिपुश्टि प्राप्त करना है।

यहाँ सतत् का आशय है मूल्यांकन की निरन्तरता। अर्थात् यह सोच विकसित करना कि विद्यार्थियों के विकास का आंकलन एक सामायिक घटना नहीं होती है वरन् यह शैक्षणिक सत्र की सम्पूर्ण अवधि में लगातार चलती रहती है।

व्यापक का आशय केवल शैक्षिक प्रगति को ही देखना नहीं है वरन् सह–शैक्षिक पक्ष का भी मूल्यांकन करना

*विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, कुँ0 आर0 सी0 महिला डिग्री कॉलेज, मैनपुरी (उत्तर प्रदेश)

है। शैक्षिक पक्ष का विकास अध्ययन के विशयों से सम्बन्धित है, जैसे–भाशा, गणित, विज्ञान एवम् सामाजिक अध्ययन आदि। सह–शैक्षिक पक्ष का सम्बन्ध व्यक्तिगत एवम् सामाजिक गुण, अभिवृत्तियाँ, रूचियों, मूल्यों, नैतिक एवम् शारीरिक विकास आदि से है।

इस प्रकार सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन का तात्पर्य विद्यार्थियों की अकादमिक प्रगति के लिए नियमित रूप से उसकी सामर्थ्य का लेखन, कमियों का चिन्हांकन, सुधारात्मक उपायों का उपयोग, समस्या का निदान, पुनः परीक्षण आदि प्रक्रियायें लागू करना है तथा इसमें विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों, अभिरूचियो, जीवन कौशलों एवम् जीवन–मूल्यों तथा मनोवृत्तियों मे होने वाले परिवर्तनों का अनुश्रवण करके सकारात्मक दिशा प्रदान करना भी सम्मिलित है।

स्पष्ट है कि सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन के अन्तर्गत मूल्यांकन के दोनों रूपों संरचनात्मक (Formative Evaluation) तथा सारांशात्मक/योगात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation) को समान रूप से समाहित किया गया है। जहां संरचनात्मक मूल्यांकन का उददेश्य शिक्षण प्रक्रिया के दौरन इस बात का पता लगाने के लिए किया जाता है कि योजनानुसार विद्यार्थियों की प्रगति हो रही है अथवा नहीं, वहीं योगात्मक मूल्यांकन शैक्षणिक सत्र के अन्त में छात्र को अगली कक्षा में प्रोन्नति देने तथा योग्यता के आधार पर उनका वर्गीकरण करने के लिए होता है।

इस प्रकार सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन में मन्दगति से सीखने वाले छात्रों की समस्याओं और कमजोरियों को चिन्हित करने और तदुपरान्त उन्हें उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching) और मार्गदर्शन (Guidance) की व्यापक सम्भावनाओं को प्रदान करने के साथ–साथ कुशाग्र बुद्धि के छात्रों के लिये समृद्ध शिक्षण की व्यवस्था कर उनका विशेष ज्ञान–सम्वर्द्धन आदि क्रियायें भी सन्निहित हैं। संक्षेप में, सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन प्रणाली छात्र की प्रगति को एक सम्पूर्ण दृष्टि (Holistic View) से देखती है जिसमें संज्ञानात्मक (Cognitive) ओर असंज्ञानात्मक (Non-cognitive) दोनों ही प्रकार के क्षेत्रों के मूल्यांकन का प्रावधान है। अतः यह 'एकांगी' मूल्यांकन न होकर 'समग्रता' लिए हुये होता है।

व्यावहारिक पक्ष

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि विद्यालय–शिक्षा गुणवत्ता में सुधार हेतु सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन प्रणाली बहुत ही महत्वपूर्ण एवम् प्रभावशाली है। परन्तु कई शोधों (कस्तूरी व जोशी, 2011; सिघंल, 2012; कोठरी व थॉमस, 2012; इसेव, 2013) आदि के परिणाम दर्शाते हैं कि विद्यालयों में उक्त मूल्यांकन प्रणाली के प्रभावशाली क्रियान्वयन में शिक्षकों के समक्ष कई तरह की कठिनाइयाँ आ रही हैं जबकि विद्यालय आधारित मूल्यांकन करने का उत्तरदायित्व शिक्षकों पर ही होता है। अतः सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक इस मूल्यांकन प्रणाली के प्रति कितने सजग व जागरूक हैं ? उन्हें इस मूल्यांकन प्रणाली सम्बन्धी नियमावली का कितना बोध हैं? ताकि प्रभावशाली तरीके से इस मूल्यांकन प्रणाली का कियान्वयन हो सके।

इस सन्दर्भ में माध्यमिक शिक्षा परिषद,उ0 प्र0 से सम्बद्ध, मैनपुरी जिले में स्थित, माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा नवीं व दसवीं में अध्यापनरत 100 शिक्षकों का आकस्मिक प्रतिदर्श विधि द्वारा चयन किया गया। सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन प्रणाली के क्रियान्वयन में आप किस तरह की कठिनाइयों/समस्याओं का सामना करते हैं ? तथा इस प्रणाली के सफल क्रियान्वयन हेतु आप क्या सुझाव देंगे ? के सन्दर्भ में सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली एवम् प्रदत्त विश्लेषण हेतु प्रतिशत प्रविधि का प्रयोग किया गया। प्रदत्त विश्लेषोपरान्त प्राप्त परिणामों को तालिका (1) में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका (1) में प्रदर्शित परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि –

1. 64 प्रतिशत शिक्षकों ने माना है कि विद्यालय में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली को शिक्षकों को प्रशिक्षण दिलाये बिना ही लागू कर दिया जिससे शिक्षक इस प्रणाली के महत्वपूर्ण पक्षों से पूर्णरूप से अवगत नहीं हो पाये।

तालिका 1

सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन प्रणाली के प्रभावशाली क्रियान्वयन के सम्बन्ध में शिक्षकों के सुझाव

क्रमांक	सुझाव	आवृतियाँ	प्रतिशत
1	शिक्षकों के सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली का उचित प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए।	64	64%
2	विद्यालयों में शिक्षक–छात्र अनुपात उचित हो।	44	44%
3	शिक्षकों को निष्पक्ष तथा कर्त्तव्यनिष्ठ होकर मूल्यांकन करना चाहिए।	40	40%
4	शिक्षा को रचनात्मक व सकारात्मक बनाया जाये।	27	27%
5	सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली को केवल अच्छे अंक प्रदान करने का साधन न समझा जायें।	25	25%
6	शिक्षकों को प्रशासनिक कार्यों सम्बन्धी दबाव से मुक्त रखा जाये।	23	23%
7	विद्यालय प्रबन्धन के सदस्यों एवम् अन्य प्रशासकीय अधिकारियों के लिए अभिमुखीकरण कार्यक्रम की व्यवस्था होनी चाहिए।	20	20%
8	आन्तरिक मूल्यांकन खुला (Open) और पारदर्शी होना चाहिए।	12	12%
9	शैक्षणिकेत्तर क्षेत्रों (Scholastic Aspect) के मूल्यांकन में विविध उपकरणों का प्रयोग करना।	11	11%
10	आन्तरिक मूल्यांकन सम्बन्धी प्रोजेक्ट कार्य आदि का निरीक्षण दूसरे विद्यालय के शिक्षकों द्वारा करवाना चाहिए।	8	8%
11	विद्यालय में स्मार्ट क्लासरोज की व्यवस्था होनी चाहिए।	7	7%
12	विद्यार्थी के व्यवहार को भी सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली में अधिभार देना चाहिए।	7	7%
13	शिक्षकों द्वारा उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।	6	6%
14	छात्रों व अभिभावकों को भी इस मूल्यांकन प्रणाली से अवगत कराया जाये।	6	6%
15	विद्यार्थियों को उनके कार्य के अनुसार अंक प्रदान किये जायें।	5	5%
16	आन्तरिक मूल्यांकन में सभी शिक्षक मिलकर पृष्ठपोषण (Feedback) प्रदान करें।	2	2%
17	आन्तरिक मूल्यांकन में असफल विद्यार्थी को मुख्य परीक्षा में शामिल न किया जाये।	1	1%

2. 44 प्रतिशत शिक्षकों का कहना है कि विद्यालय मे शिक्षक–छात्र अनुपात उचित हो। वर्तमान में माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की अत्यधिक कमी है जो शिक्षण–कार्य को प्रभावित करती है।
3. 40 प्रतिशत शिक्षकों का मत है कि शिक्षकों को निष्पक्ष तथा कर्त्तव्यनिष्ठ होकर मूल्यांकन करना चाहिये।
4. 27 प्रतिशत शिक्षकों का सुझाव है कि शिक्षण विधियों/प्रविधियों आदि में नवीनीकरण करके शिक्षा को रचनात्मक व सकारात्मक बनाया जाए।
5. 25 प्रतिशत शिक्षकों ने स्पष्ट किया कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली को केवल अच्छें अंक प्रदान करने का साधन न समझा जाये।
6. 23 प्रतिशत शिक्षकों ने विचार प्रस्तुत किया कि सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन प्रणाली के सफल कियान्वयन हेतु शिक्षकों को प्रशासनिक सम्बन्धी कार्यो के दबाव से मुक्त रखा जाए।

7. 20 प्रतिशत शिक्षकों ने सुझाव दिया कि विद्यालय प्रबन्धन के सदस्यों एवं अन्य प्रशासकीय अधिकारियों के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम (Orientation Programme) आवश्यक है।
8. 12 प्रतिशत शिक्षकों ने स्पष्ट किया कि आन्तरिक मूल्यांकन खुला ;व्चमदद्ध और पारदर्शी होना चाहिए।
9. 11 प्रतिशत शिक्षकों का मत है कि विद्यार्थियों के मूल्यांकन हेतु विविध उपकरणों एवम् प्रविधियों का प्रयोग किया जाना चाहिये।
10. 8 प्रतिशत शिक्षकों की सोच यह कहती है कि आन्तरिक मूल्यांकन सम्बन्धी प्रोजेक्ट कार्यों का निरीक्षण दूसरे विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा करवाना चाहिए जिससे मूल्यांकन में निष्पक्षता बनी रहे।
11. 7 प्रतिशत शिक्षकों का कहना है कि विद्यार्थी के व्यवहार को भी आन्तरिक मूल्यांकन में अधिभार देना चाहिए।
12. 6 प्रतिशत शिक्षकों का मत है विद्यालय में शिक्षकों द्वारा उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching) की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे कमजोर छात्र शिक्षण कार्य में रूचि लें।
13. 6 प्रतिशत शिक्षकों का कहना है कि विद्यार्थियो को भी इस मूल्यांकन प्रणाली से पूर्णरूप से अवगत कराया जाए जिससे वे प्रोजेक्ट कार्य व मौखिक परीक्षा आदि में रूचि लें।
14. 5 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को उनके कार्य के अनुसार अंक प्रदान किये जाने का सुझाव दिया गया।

अन्य सुझाव

सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन के प्रभावशाली क्रियान्वयन हेतु आवश्यक है कि उक्त सुझावों को अमल में लाने के साथ–साथ शिक्षकों मे निम्न कुशलताओं को भी विकसित किया जाए–

1. शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के समक्ष कक्षा में या कक्षा के बाहर चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को प्रस्तुत करना एवम पूछताछ, खोज, चिन्तन, व्यावहारिक प्रयोग, प्रश्न करना, वाद–विवाद एवम् आपस में अन्तः क्रिया के अवसर प्रदान करने का कौशल विकसित करना।
2. शिक्षक में, कक्षा संचालन के समय ज्ञानात्मक, भावात्मक एवम् कौशलात्मक पक्षों के सन्दर्भ में विक्ज, प्रश्नपत्रों व अभ्यास पत्रकों की, रचना सम्बन्धी दक्षता विकसित करना।
3. शिक्षकों को विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं सह–शैक्षिक (Scholastic & Co- Scholastic) दोनों पक्षों का मूल्यांकन करने में निपुण बनाना।
4. शिक्षकों को विकासात्मक/संरचनात्मक (Formative) व सारांशात्मक/योगात्मक (Summative) मूल्यांकन करने की विभिन्न विधियों व प्रविधियों में प्रशिक्षित करना एवम् उनका समुचित प्रयोग करने का कौशल विकसित करना।
5. शिक्षकों मे छात्र प्रोफाइल (Portfolio) तैयार करने का कौशल विकसित करना।
6. शिक्षकों में निदानात्मक एवम् उपचारात्मक शिक्षण करने की क्षमता विकसित करना।
7. शिक्षकों को सूचना–सम्प्रेषण तकनीकी (I.C.T) के क्षेत्र में दक्ष बनाना जिससे मूल्यांकन सम्बन्धी विभिन्न कोमल उपागमों (Software) का उपयोग कर शिक्षक अपने कार्यभार (Workload) को कम कर सकें।

शिक्षकों में सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन सम्बन्धी उक्त क्षमताओं, कुशलताओं एवम् दक्षताओं को विकसित करने हेतु निम्न तरीकों को अपनाया जा सकता है–

1. निर्देश की अपेक्षा अभ्यास पर बल देना।
2. शिक्षकों हेतु उन्मुखीकरण कार्यक्रम (Orientation Programme) की व्यवस्था करना।
3. संगोष्ठी व कार्यशालाओं का आयोजन करना।
4. अतिथि व्याख्यानों की व्यवस्था करना।
5. सामूहिक चर्चा का आयोजन करना।
6. दृश्य–श्रव्य सहायक सामग्री के माध्यम से मूल्यांकन प्रणाली का स्पष्टीकरण।

निष्कर्ष

इस प्रकार शिक्षा प्रणाली के सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यानि विद्यार्थी की ग्रहणशीलता व बौद्धिक क्षमता के मापन हेतु सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली अत्यन्त कारगर सिद्ध हो सकती है। इसके प्रभावशाली क्रियान्वयन हेतु शिक्षक विद्यार्थियों का मूल्यांकन निष्पक्ष तरीके से करें और इस प्रणाली का उचित एवं सटीक प्रयोग करें।

क्योंकि शिक्षा प्रक्रिया के आधार स्तम्भ शिक्षकों पर ही शैक्षिक योजनाओं की जवाबदेही होती है। पहले तो शिक्षकों को स्वयं जागरूक होना होगा साथ ही शिक्षकों को सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली में लागू नियमों, प्रावधानों को सैद्धान्तिकता के साथ–साथ व्यावहारिक रूप में भी अपनाना होगा जिससे शिक्षा का गिरता स्तर, उपस्थिति मे गिरावट व ड्रॉपआउट जैसी गम्भीर समस्याओं को समाप्त करने की दिशा में कदम बढ़ाया जा सके, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जा सके एवं वर्तमान शैक्षिक प्रणाली मे आमूलचूल परिवर्तन किये जा सकें। इससे शिक्षा विद्यार्थियों के लिए बोझिल, उबाऊ व मजबूरी न बनकर, उनके जीवन की अपरिहार्य साथी बन सकेगी।

सन्दर्भ

I save, Madhuri (2013) : Study the Continuous Comprehensive Evaluation scheme at secondary school . An International Peer reviewed scholarly research Journal for Inter-disciplinary studies; ISSN : 2278-8808 (Online Journal), www.srjis.com.

Continuous and comprehensive Evaluation Manual for Teachers classed IX and X Delhi : Central Board of Secondary Education.

गुप्ता, एस0 पी0 (2006) : आधुनिक मापन और मूल्यांकन. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन; पृष्ठ सं0 36–42.

Kasture P. B. and Joshi (2011) : Innovative Evaluation Procedure for Learners Reflection of Teachers Educators and B.Ed. Trainees. Indian Streams Research Journal; Vol. 1 (5); ISSN 2230-7850 (Online Journal); www.isrj.org

Kothari , R. G. and Thomas,Mary Vineetha (2012): A Study on Implementation of Continuous and Comprehensive Evaluational in upper Primary School of Kerala. MIER Journal of Educational Studies: Trends and Practice; Vol 2(2); pp168-178.

खरबन्दा, राखी एवं सिंह, आर0 जे0 (2011): सतत् विद्यार्थी मूल्यांकन : औचित्य, सम्भावनायें और सीमायें. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका; वा0 30(1); पृ0सं0 75–82

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या को रूपरेखा (2005): नई दिल्लीः एन0सी0ई0आर0टी0; पृ0 सं0 81–87

विश्नोई, माया (2012) शिक्षा की नई प्रणाली सी0सी0ई0 का अवलोकनः शिक्षामित्रः Vol.4 (4), पृष्ठ. 24.26.

Singhal, Pooja(2012) : Continuous Comprehensive Evaluation : A Study of teachers Perception. Delhi Business Review : Vol 13 (01).